

अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद-लेखन गद्‌य की एक विधा है। जब किसी सूक्ति, विचार, घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किन्तु सुसंगठित एवं सारगर्भित ढंग से लिखा जाता है, उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं। निबन्ध और अनुच्छेद में वही अंतर है जो नाटक और एकांकी तथा उपन्यास और कहानी में है। निबंध में जहाँ विषय से सम्बन्धित विचारों को समग्र रूप से बाँधा जाता है, वहीं अनुच्छेद में विषय को संतुलित एवं सटीक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। छोटे-छोटे वाक्य एवं कसी हुई रचना-अनुच्छेद लेखन की मुख्य विशेषताएँ हैं।

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए -

1. अनुच्छेद-लेखन में शुरू से अंत तक एक ही अनुच्छेद होना चाहिए।
2. अनुच्छेद-लेखन में भूमिका या उपसंहार की आवश्यकता नहीं होती। अतः सीधे विषय से ही शुरू करना चाहिए।
3. अनुच्छेद में यदि शब्दों की सीमा निर्धारित की गई है तो अनुच्छेद उसी के आस-पास होना चाहिए।
4. अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
5. अनुच्छेद-लेखन में एक वाक्य का दूसरे से सम्बन्ध होना चाहिए। इससे बड़ी सरलता से विषय स्पष्ट हो जाता है।
6. भाषा विषय के अनुरूप होनी चाहिए। यदि विषय विचार प्रधान है तो उसमें तर्क अधिक होना चाहिए। यदि अनुच्छेद भावात्मक है तो उसमें अनुभूति की प्रधानता होनी चाहिए।
7. अनुच्छेद के विषय सरल, रुचिपूर्ण तथा आसपास की घटनाओं से संबंधित होने चाहिए।
8. अनुच्छेद की हर बात व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध होनी चाहिए।

यहाँ कुछ अनुच्छेदों को उदाहरण स्वरूप दिया जा रहा है।

मेरी दिनचर्या

दिनचर्या से अभिप्राय है- नित्य किए जाने वाले काम। इन कामों को योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए। मैंने अपनी पढ़ाई, व्यायाम, खेलकूद, मनोरंजन व विश्राम आदि के आधार पर अपनी दिनचर्या बनायी हुई है। इसी के आधार पर मैं दिनभर काम करता हूँ। मेरा स्कूल सुबह आठ बजे

लगता है, किन्तु मैं सुबह पाँच बजे उठकर पहले अपने पिता जी के साथ मैर को जाता हूँ। कुछ व्यायाम भी करता हूँ। घर आकर नहा-धोकर थोड़ी देर पढ़ता हूँ क्योंकि इस समय बातावरण में शान्ति होती है तथा दिमाग ताजा होता है। नाश्ता करके मैं सुबह स्कूल चला जाता हूँ। स्कूल से छुट्टी के बाद खाना खाकर मैं पहले थोड़ी देर आराम करता हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं शाम को एक घंटा फुटबॉल खेलता हूँ। मैं खेलने के बाद घर आकर स्कूल से मिले होमवर्क को करता हूँ। होमवर्क के बाद मैं कठिन विषयों का अभ्यास भी करता हूँ। इसके बाद मैं लगभग आधा घंटा टेलीविज़न पर अपना मनपसंद चैनल देखता हूँ। फिर खाना खाकर थोड़ी देर मैर भी करता हूँ। तत्पश्चात सरल विषयों का भी अध्ययन करता हूँ। मैं रात को सोने से पहले प्रभु का स्मरण करता हूँ और सो जाता हूँ। इस दिनचर्या से मेरा जीवन नियमित हो गया है।।

मेरी पहली हवाई यात्रा

इस बार गर्भियों की छुट्टियों में मेरे माता-पिता ने श्रीनगर जाने का प्रोग्राम बनाया। मेरे पिता जी ने इंटरनेट के माध्यम से 'गो एयर' कंपनी की टिकटें बुक करवा दीं। यात्रा के निर्धारित दिन हम टैक्सी से हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हम पूछताछ करके 'गो एयर' कंपनी के काउंटर पर पहुँचे। हमने अपना सामान चैक करवाया और उन्होंने बताया कि हमारा वह सामान सीधा जहाज में रखवा दिया जाएगा। हमें अपने सामान की रसीद और यात्री पास दे दिए गए। सामान जमा करवाकर हम उस ओर बढ़े जहाँ व्यक्तियों के हैंडबैग, मोबाइल, लैपटॉप, कैमरा आदि की चैकिंग की जा रही थी। कम्प्यूटर तकनीक के माध्यम से सामान की चैकिंग देखकर मैं दंग रह गई। पहली हवाई यात्रा का कम्प्यूटर उठाने के लिए मैं उत्सुक थी। इसके बाद हम निर्धारित स्थान पर पहुँच गए, हमारी टिकटें आनन्द उठाने के लिए मैं उत्सुक थी। जहाज में विमान परिचारिकाओं ने हमारा स्वागत किया, हमें चैक हुई और हम जहाज में जा बैठे। जहाज में विमान परिचारिकाओं ने हमारा स्वागत किया, हमें सीट बैल्ट बाँधने की हिदायतें दीं और कुछ ही पलों में जहाज ने उड़ान भरी और देखते ही देखते वह बादलों के बीच था। इतनी सुखद व रोमांचकारी यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगी।

मेरे जीवन का लक्ष्य

मैं अब दसवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मैंने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया है। मैं बड़ा माध्यम से पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंक फैलाने की घटनाएँ पढ़ने-सुनने को मिलती हैं। चीन ने पहले ही भारत का एक बड़ा भूभाग दबाकर बांग्लादेश से भी भारत में घुसपैठ होती रहती है। चीन ने पहले ही भारत का एक बड़ा भूभाग दबाकर एक लम्बी गुलामी के बाद बड़ी कुर्बानियाँ देकर आज़ादी प्राप्त की है। इसे कायम रखना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। मैं अब कभी दोबारा भारत पर कोई भी आँच नहीं आने दूँगा। मुझे खुशी है कि मेरे जीवन के लक्ष्य निर्धारण में मेरा परिवार मेरे साथ है। मेरे मामा जी भी लम्बे समय से फौज हैं कि मेरे जीवन के लक्ष्य निर्धारण में मेरा परिवार मेरे साथ है।

में अफसर हैं। उन्होंने भी मुझे काफी प्रेरित किया है। उन्होंने अन्य विषयों के साथ-साथ विशेष रूप से गणित और विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त करने, शरीर को स्वस्थ व फुर्तीला रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करने तथा जीवन में निःरता व अनुशासन पर बल देने की बात कही है। निःसंदेह रहस्य कठिन है किन्तु मुझे विश्वास है कि आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति व मेहनत के सहारे मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लूँगा।

हम घर में सहयोग कैसे करें

जीवन में सहयोग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। हमें सब के साथ सहयोग करना चाहिए। इसका प्रारम्भ घर से करना चाहिए। हमें घर में मिलजुलकर रहना चाहिए। पिता जी मेहनत से रोजी-रोटी कमाकर परिवार का पालन पोषण करते हैं। माँ घर के कार्यों जैसे-साफ-सफाई, खाना बनाना, बर्तन-कपड़े धोना आदि सभी काम करती हैं। इसलिए हमें भी घर के अन्य छोटे-मोटे कार्यों में माता-पिता का हाथ बंटाना चाहिए। हम बाजार से दूध, फल, सब्जियाँ आदि लाकर घर में सहयोग दे सकते हैं। बिजली, पानी और टेलीफोन का बिल समय पर जमा करवा सकते हैं। घर में उचित बाह पर चीजों को रखकर, खाना परोसकर, खाने के बाद खाने के टेबल से बर्तन उठाकर रसोईघर में रखकर, छोटे भाई-बहनों को पढ़ाकर हम घर में एक दूसरे को सहयोग दे सकते हैं। घर के छोटे सदस्य बांधे में लगे पौधों को पानी देकर, इधर-उधर कागज न फेंककर तथा खिलौने आदि से खेलने के बाद उन्हें समेटकर सहयोग दे सकते हैं। घर में किसी के बीमार पड़ने पर उसकी दवाई का प्रबन्ध करके तथा उसकी सेवा करके भी हम सहयोग कर सकते हैं। इस प्रकार आपसी सहयोग से घर खुशहाल बन जाएगा।